IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका

'Role Of Regional Political, Parties In India

*इन्दर प्रसाद ** प्रतिभा वर्मा

राजनीति विज्ञान विभाग डी0एस0बी0परिसर कुमाऊँ वि"वविद्यालय नैनीताल

राजनीति विज्ञान विभाग एमबी0 पी0 जी0 कॉलेज हल्द्वानी नैनीताल

भारत एक प्रजातान्त्रिक देश है। प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में अब्राहम लिंकन ने गेटीसबर्ग संबोधन के दौरान 1863 में कहा था कि जनता द्वारा जनता के कल्याण के लिए एवं जनता द्वारा शासन किया जाता है। प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली में सभी नागरिकों को यह अधिकार होता है कि उनकी आवाज को सुना जाए चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, लिंग या क्षेत्र के हों। भारत में संघोय शासन प्रणाली अपनाई गई है। जिसमें भाक्ति का विभाजन आं"ाक रूप से केन्द्र सरकारों के पास है। संघीय शासन प्रणाली में नीतियां एवं कार्यक्रम राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं जिसके कारण क्षेत्रीय समस्याएं या तो उपेक्षित हो जाती हैं या उन पर कम ध्यान दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में उन क्षेत्रीय समस्याओं या मुद्दों को आवाज देने और उन पर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित करने के लिए क्षेत्रीय दलों का उदय होता है।

मुख्य भाब्द–क्षेत्रीय राजनीतिक दल, क्षेत्रीय कारक, क्षेत्रोयता, क्षेत्रीय दलों की भूमिका

प्रस्तावना

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक गणराज्य है इस नाते इस देश में प्रत्येक व्यक्ति, जाति, वर्ग और समाज की आवाज सत्ता के केन्द्र तक पहुंचे इसकी व्यवस्था की गई है। पिछले कुछ दशकों से हो रहे चुनावों के परिणामों पर गौर करें तो यह समझ आता है कि वर्तमान में ये क्षेत्रीय राजनीतिक दल राष्ट्रीय दलों के लिए बड़ी चुनौती बनते जा रहे हैं। क्षेत्रीय दलों के कारण इन राष्ट्रीय दलों को कई राज्यों में इनका सहारा लेना पड़ता है और हालात ये है। कि भारतीय जनता पार्टी जो वर्तमान में केन्द्र की सत्ता में उसकी 14 राज्यों में भारतीय जनता पार्टी की पूर्ण बहुमत की सरकार हैं। और 4 राज्यों में सहयोगी क्षेत्रीय दलों की अहम भूमिका में गठबन्धन की सरकार है वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस जिसने दे"ा में सबसे लम्बे समय तक राज किया है। वह अपने वजूद के लिए संघर्ष कर रही है। क्षेत्रीय दलों के बढ़ते प्रभाव ने इन राष्ट्रीय दलों के समक्ष कई जगह तो अस्तित्व का संकट पैदा कर दिया है। वर्तमान राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण हो गई है। आज राजनीतिक चुनावी महा पर्व में क्षेत्रीय दलों को जो महत्त्व दिया जा रहा है। उसका देश के एकात्मक संघीय ढाँचे पर गम्भीर बहुमुखी प्रभाव पड़ रहा हैं। हमारे यहां पर क्षेत्रीय दल कुकुरमुत्तों की भांति है। ये दल वर्ग संघर्ष और

प्रांतवाद–भाषावाद के जनक हैं। कुछ पार्टियां वर्ग संघर्ष को कुछ पार्टियां प्रांतवाद और भाषावाद और क्षेत्रीय वाद को बढ़ावा देने वाली पार्टियां बन गई हैं।

भारत में बहुदलीय व्यवस्था है। भारतीय निर्वाचन आयोग मार्च 2024 के नवीनतम ऑकड़ों के अनुसार यह अनुमान है कि आजादी के बाद से भारत में 2100 से अधिक पंजीकृत राजनीतिक दल सामने आए हैं। अब, केंद्र और राज्य दोनों की राजनीति में केवल छह राष्ट्रीय राजनीतिक दल और 60 से अधिक राज्य स्तरीय, क्षेत्रीय राजनीतिक दल सक्रिय हैं। पहले क्षेत्रीय दल कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व के कारण केंद्र में प्रमुख भूमिका निभाने में असमर्थ थे। लेकिन हाल ही में, क्षेत्रीय दलों के उदय ने भारत की प्रभाव भााली दल के लिए सबसे शक्तिशाली चुनौती पेश की है। 1967 के बाद से, क्षेत्रीय दल राज्य की अधिकांश राजनीति को नियंत्रित करने के लिए अधिक से अधिक राजनीतिक अपील के साथ उभर रहे हैं। वे एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में उभर रहें है। और केंद्र में 2024 के 18 वीं लोकसभा चुनाव में क्षेत्रीय दलों ने महत्वपूर्ण भूमिका रही जिसमें अहम भूमिका में चन्द्र बाबू नायडू की टी0 डी0 पी0 तेलगु दे"ाम पार्टा और नीति"ा कुमार, बिहार की ज0 डी0 यू0 जनता दल युनाईटेड सरकार बनान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ,ये क्षेत्रीय दल सरकार के प्रमुख स्तंभ बन गये केन्द्र सरकार की स्थिरता इन दलों पर निर्भर है। [1]

भारतीय समाज के भीतर कई जातीय, सांस्कृतिक, भाषाई, धार्मिक और जाति समूहों की उपस्थिति क्षेत्रीय दलों की उत्पत्ति और विकास के लिए बहुत जिम्मेदार है। हालांकि क्षेत्रीय दल सीमित क्षेत्रों में काम करते हैं और केवल सीमित उद्देश्यों का पालन करते हैं, उन्होंने राज्य के साथ–साथ राष्ट्रीय राजनीति दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन दलों ने कई राज्यों में सरकार बनाई है। और अपनो नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करने की कोशिश की है। कुछ क्षेत्रीय दल केंद्र में गठबंधन सरकार में भी भागीदार हैं। आठवें लोकसभा चुनाव (1984) में, आंध्र प्रदेश की एक क्षेत्रीय पार्टी तेलगु देशम मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी।[2]

क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का उदय भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर एक शाश्वत विषय प्रतीत होता है। वास्तव में, यह भारतीय राजनीतिक विश्लेषण का एक मानक विशय बन गया है जो पाठकों को भारत की अलग–अलग पार्टी प्रणाली और स्थानीय पार्टियों की बहुलता के उत्साहित विवरणों से भर देता है।[3]

क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय दल

भारतीय दलीय व्यवस्था की एक विशेषता है कि बडी़ सख्या में क्षेत्रीय दलों का होना है। क्षेत्रीय दल से हमारा अर्थ ऐसे दल से है जो एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र में कार्य करते है और इसकी गतिविधियां केवल एक अथवा मुट्ठी भर राज्यों तक सीमित होती हैं। दुसरे शब्दों में, राष्ट्रीय दलों के व्यापक विभिन्न प्रकार के हितों की तुलना में क्षेत्रीय दल एक विशेष क्षेत्रीय हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सरल शब्दों में, क्षेत्रीय दल अखिल भारतीय दलों से अपने दृष्टिकोण और हितों की दृष्टि से दोनों में बहुत अंतर है। वे केवल राज्य अथवा क्षेत्रीय स्तर पर सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं। और राष्ट्रीय सरकार पर नियंत्रण बनाने की इच्छा नहीं रखते। यह बात ध्यान देने योग्य है कि भारत में क्षेत्रीय दलों की संख्या राष्ट्रीय दलों से काफी अधिक है और कुछ राज्यों में क्षेत्रीय दल शासन भी कर रहे ह ं। जैसे पंजाब, तमिलनाडु, बिहार, झारखण्ड,प"चम बंगाल, आन्ध्र प्रदे"ा, आदि।

क्षेत्रवाद शब्द को दो अर्थों में समझा जा सकता है। नकारात्मक भाव में इसका अर्थ है, अपने क्षेत्र को देश अथवा राज्य की तुलना में अधिक अपना मानना। सकारात्मक दृष्टि से यह राजनीतिक गुण है, जो अपने क्षेत्र, संस्कृति, भाषा इत्यादि के साथ जुड़े लोगों का अपनत्व है जो अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना चाहता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सकारात्मक क्षेत्रवाद तब तक स्वागत योग्य है। जब तक यह संयुक्त भाषा, धर्म और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर भाईचारे और साझेपन ,समानता को बढ़ाने में प्रोत्साहन देता है।

राजनीति विज्ञान व्यवहार में लोकतंत्र नकारात्मक भाव में क्षेत्रवाद देश की एकता और अखण्डता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। भारतीय संदर्भ में प्रायः क्षेत्रवाद शब्द का नकारात्मक भाव में प्रयोग किया जाता रहा है। क्षेत्रवाद की भावना या तो शासन करने वाले अधिकारियों द्वारा एक क्षेत्र विशेष की निरंतर अवहेलना अथवा भेदभाव सह रहे पिछड़े लोगों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ने के फलस्वरूप उभर सकती है। आमतौर पर कुछ राजनीतिक नेता क्षेत्रवाद की भावना को प्रोत्साहित करते रहते हैं। ताकि एक विशेष क्षेत्र अथवा लोगों के समूह पर उनका नियंत्राण बना रहे। [4]

https://digital.nios.ac.in/topic.php?id=317hi

क्षेत्रीय दलों के उदय के कारण

भारत एक बहुभाषी, बहुजातीय, बहुक्षेत्रीय, विविध संस्कृति, और विभिन्न विविधताओं का देश है। भारत जैसे विशाल एवं विभिन्नताओं से भरे देश में क्षेत्रीय दलों के उदय के अनेक कारण हैं।

पहला प्रमुख कारण जातीय, सांस्कृतिक एवं भाषायी विभिन्नताएं हैं। विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की अपनी समस्याएँ होती हं। जिन पर राष्ट्रीय दलों या केन्द्रीय नेताओं का ध्यान नहीं जाता। परिणाम स्वरूप क्षेत्रीय दलों का उदय होता है। दूसरा कारण केन्द्र अपनी शक्तियों का प्रयोग मनमाने ढंग से करता रहा है। केन्द्र की शक्तियों के केन्द्रीयकरण की इसी प्रवृत्ति के कारण अनेक क्षेत्रीय दलों का जन्म हुआ है। तीसरा,कारण उत्तर भारत की प्रधानता को लेकर आशंकाएँ भी क्षेत्रीय दलों के उदय का कारण रहा है। क्षेत्रीय दलों के उदय का चौथा प्रमुख कारण कांग्रेस दल की संगठनात्मक दोष भी है। केन्द्र में कांग्रेस की स्थिति तो मजबूत थी परन्तु राज्यों में कांग्रेस संगठन विखरता जा रहा था। परिणाम स्वरूप कांग्रेस में संगठन संबंधी फूट और कमजोरियां आ गई और राज्य स्तर के अनेक नेताओं ने क्षेत्रीय दलों के गठन में प्रमुख भूमिका निभाई। पांचवा, क्षेत्रीय दलों के उदय का कारण जातीय असंतोष भी रहा है। अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं अन्य पिछड़े वर्गो के लिए सामाजिक न्याय की माँग हेतु भो क्षेत्रीय दलों का उदय हुआ है।[5]

देश की सबसे दो बड़ी राष्ट्रीय पार्टियों को अपना सियासी किला मजबूत करने के लिए क्षेत्रीय पार्टियों के सहयोग की दरकार है। दोनों दलों को पता है कि बिना क्षेत्रीय पार्टियों के उनकी सरकार नहीं बन सकती है। इसलिए 45 पार्टियों वाला (एनडीए) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन भी नए क्षेत्रीय दलों की तलाश में है और 14 पार्टियों वाला यूपीए जनतांत्रिक गठबन्धन भी कुछ दल तीसरा मोर्चे पर संघीय मोर्चा जैसा कोई गठजोड़ बनाना चाहती हैं जो गैर भाजपाई और गैर कांग्रेसी हो. उन्हें दोनों से दिक्कत है. इसके बावजूद बीजेपी और कांग्रेस के लिए इन्हीं पार्टियों से उम्मीद ज्यादा है. ऐसे में सबसे बड़ा सवाल ये है कि 2019 के 17वीं लोकसभा चुनाव में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की (एनडीए) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनाने में अहम भूमिका में रही हैं। इस समय सत्तारूढ़ बीजेपी के खिलाफ सपा, बसपा, टीडीपी, टीआरएस, टीएमसी, आरजेडी और आरएलडी जैसी पार्टियां एकजुट हो रही हैं. लोगों को इनका झुकाव कांग्रेस की तरफ लगता है. लेकिन क्षेत्रीय पार्टियों के नेताओं की इच्छा ये है कि बीजेपी हार जाए, लेकिन कांग्रेस मजबूत भी न हो. इसके पीछे इन पार्टियों के आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा है. 2014 के चुनाव में राष्ट्रीय पार्टियों ने 342 सीटों पर कब्जा जमाया था, जबकि क्षेत्रीय दलों ने 203 सीट पर. मोदी लहर के बावजूद क्षेत्रीय पार्टियों ने अपना दमखम दिखाया था। और 2019 के 17 वीं लोकसभा चुनाव में मोदी लहर के बावजूद भी क्षेत्रीय दलों ने 97 सीटें जीती थी। कांग्रेस के नेतृत्व वाले क्षेत्रीय दलों ने 92 सीटें जीती थी।

क्षेत्रीय दलों की भागूआत

16वीं सदी के पुनर्गठन के दौरान क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने केंद्र–राज्य संबंधों के लिए। मांग को इसका कारण यह है कि कई क्षेत्रीय दल इसमें शामिल हुए विभिन्न राज्यों में अस्तित्व में आये 1983 के विधानसभा चुनावों के बाद केंद्र–राज्य के संबंध में नए रुझानों का अनुभव किया गया है। उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दो दक्षिणी राज्यों कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में सत्ता से बाहर हो गए। तेलुगु देशम सत्तारूढ़ नई पार्टी के रूप में उभरी है। जो आश्चर्य चकित है। एन0टी0रामा राव आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। उन्होंने निर्णय लिया कि सभी गैर–कांग्रेसी राजनीतिक दलों को केंद्र–राज्य संबंध के बारे में चर्चा के लिए बुलाते हैं और एक मजबूत संघ का निर्माण कर के केन्द्र में सरकार बनाते हैं।[6]

क्षेत्रीयता

भारतीय राजनीति का एक प्रमुख निर्धारक तत्त्व क्षेत्रीयता है जिसके कारण लोग भारतीय संघ की अपेक्षा उस क्षेत्र एवं राज्य विशेष को अधिक महत्त्व देते हैं। जिसमें वे रहते हैं। प्रान्तीयता और क्षेत्रीयता की इस प्रवृत्ति को समाप्त करने और सभी को एक राष्ट्र के प्रति निष्ठावान बनाने की दृष्टि से संविधान द्वारा नागरिकता की व्यवस्था की गई है, लेकिन हमारे मस्तिष्क में भारतीय नागरिक होने की अपेक्षा बंगाली बिहारी, गुजराती, मराठी, मद्रासी, राजस्थानी या पंजाबी होने की चेतना अधिक है। परिणाम स्वरूप अनेक अवसर ऐसे आते हैं जब क्षेत्रीय संकीर्णता भारतीय राष्ट्रीयता को बुरी तरह विषाक्त कर देती है। क्षेत्रीयता की समस्या संघीय संविधान की देन है। एकोकरण का अभिप्राय है विभिन्न अंगों को मिलाकर एक रूप देना इसके दो अर्थ हैं। एक तो अंगों में विभिन्नता एवं दूसरे उन अंगों को एक रूप देने की समस्या। इस सन्दर्भ में आवश्यक है कि विभिन्न अंगों का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व होते हुए भी उनकी विभिन्नता एकीकरण के माग में अधिक न हो वरन् इस प्रक्रिया में सहायक और परिपूर्ण हो, एकीकरण के लिए उपरोक्त इन दोनों शर्तों का होना आवश्यक है। इस प्रकार एकीकरण द्वारा प्रत्येक अंग यह अनुभव करे कि वह एक.दूसरे के लिए सहायक है, आवश्यक है इसलिए उनका एक होना परस्पर लाभप्रद है। केन्द्र की तानाशाही प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप राज्यों में क्षेत्रीयता की भावना प्रबल हो जाती है। प्रादेशिक इकाइयों का अस्तित्व और क्षेत्रीयता एक.दूसरे के पर्यायवाची नहीं हैं। भारतीय राजनीति में क्षेत्रीयता एक प्रयोग है जिसका अभिप्राय है राष्ट्र की तुलना में किसी क्षेत्र विशेष अथवा राज्य या प्रान्त की अपेक्षा छोटे क्षेत्र से लगाव अथवा उसके प्रति भक्ति या विशेष आकर्षण इस तरह क्षेत्रीयता राष्ट्रीयता की भावना का एक विलोम है जिसका उद्देश्य होता है संकीर्ण क्षेत्रीय स्वार्थों की पूर्ति करना। भारतीय राजनीतिक परिवेश में यह एक ऐसी धारणा है जो भाषाएं धर्म क्षेत्र आदि पर आधारित है और जो राष्ट्रीय एकीकरण के मार्ग को ध्वस्त करते हुए विखण्डन एवं पृथकतावादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देती है जिसे विविध सामाजिक हितों की अभिव्यक्ति की धुरी कहा जा सकता है।[7]

डॉ श्री राम महे"वरी पृ.185A region is a profound sociological.

'Ref A region is a profound sociological fact neglected in it being treated as the nucleus of social aggregation for multiple purposes Dr Shri Ram maheswari p 185

क्षेत्रीय कारक

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीयता के प्रमुख कारण ;(Causes of Regionalism in Indian Politics)

साँस्कृतिक विभिन्नता भारत के राज्यों में सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण क्षेत्रीयता को प्रोत्साहन मिला है। इसी आधार पर वर्षों पूर्व मद्रास में द्रविड़ मुनेत्र कड़गम ने भारतीय संघ से पृथक होने की बात कही थी। असम में असम गण परिषद भी असमी संस्कृति की रक्षा के लिए प्रयत्नशील रही है। भाषागत विभिन्नता भाषागत विविधता ने भी क्षेत्रीयता की भावना को उकसाया, भाशावाद,क्षेत्रवाद,प्रांतवाद आदि क्षेत्रीय कारक हैं।

क्षेत्रीय दलों की गठबंधन सरकार में भूमिका

हाल ही के दिनों में क्षेत्रीय दलों के उदय ने चिह्नित किया है कि चुनावी राजनीति में क्षेत्रीय कारक का गठबंधन जैसा कि आमतौर पर राजनीति विज्ञान में प्रयोग किया जाता है, यह एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक बहुदलीय प्रणाली की अनिवार्यताओं से गठबंधन एक बहुदलीय सरकार की परिघटना है। जहां कई अल्पसंख्यक दल सरकार चलाने के उद्देश्य से हाथ मिलाते हैं, गठबंधन तब बनता है, जब घर में कई अलग–अलग गुट हाथ मिलाने के लिए राजी हो जाते हैं। अपने व्यापक मतभेदों को भुलाकर और बहुमत को पाकर एक साझा मंच तैयार करते हैं। एक गठबंधन सरकार में दो या दो से अधिक दल होते हैं जिन्हें सिद्धांतों पर समझौता और जनादेश को साझा करना पडता है। यह ज्यादातर तब होता है जब राजनीतिक दलों को संसद में पूर्ण बहुमत नहीं मिलता है। एक गठबंधन सरकार हमेशा खींचतान और दबाव में रहती है, खासकर भारत जैसा बहुराष्ट्रीय देश में गठबन्धन के साझीदार हमेशा धांधली करते हैं दी गई स्थिति और कभी हार न मानें जब तक कि यह टूट या बना न हो। इसलिये, गठबंधन अक्सर निविदा हक पर रहता है। जब तक कि प्रत्येक भागीदार को बोर्ड में नहीं लिया जाता। कोई भी साथी तब तक बोर्ड में नहीं आता जब तक उसे उचित हिस्सा नहीं दिया जाता। शब्द गठबंधन लैटिन शब्द गठबंधन से लिया गया है जो मौखिक मूल "**coalescere**" है। इसमें दो शब्द **"Co"**का अर्थ है एक साथ और **lescere** का अर्थ है एक साथ जाना या बढ़ना गठबंधन का अर्थ है एक साथ जोड़ने का कार्य, या एक निकाय, व्यक्तियों के संघ,राज्यों या गठबंधन में एकजुट होना। [8]

Dr Ram, D. Sundar (eds), "Coalition Politics In India Search for Political Stability", Nation Publishing House, New Delhi, 2000, p. 130

क्षेत्रीय दलों की सरकार गठन में भूमिका

आजादी के बाद से भारत में कई क्षेत्रीय राजनीतिक दल उभरे हैं और कुछ क्षेत्रों में प्रमुख प्रभाव प्राप्त किये है क्षेत्रवाद की लोकप्रियता है कि राजनीतिक पर्यवेक्षकों द्वारा इस आधार पर स्वागत किया गया है कि अधिक क्षेत्रीय दल सत्ता में आएंगे,तो केंद्र और राज्य के बीच असंतुलन उतना ही कम होगा दावा किया जा रहा है कि क्षेत्रीय दल इसे बेहतर ढंग से समझ पाएंगे लोगों की क्षेत्रीय आशाएं और आकांक्षाएं भारत एक बहुभाषी और एक बहु–सांस्कृतिक राष्ट्र हैं। भाषाई और सांस्कृतिक विविधतायें है। एक विशेष भाषाई क्षेत्र में रहने वाले लोगों की प्रवृत्ति होती है कि खुद को पहचानें और उस क्षेत्र से जुड़ें।

निश्कर्श

भारत ने बहुदलीय राजनैतिक व्यवस्था को अपनाया है इसका अर्थ यह है कि यहाँ क्षेत्रीय अथवा राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर अनेक राजनैतिक दल कार्यरत हैं। राजनैतिक दल से तात्पर्य ऐसे संगठनों से है जिन्हें "सामान्य राजनैतिक हित एवं विचारधारा" के आधार पर गठित किया गया है इनका मुख्य उद्देश्य चुनाव में भाग लेकर सत्ता की साझेदारी करना है। हालाँकि इसके अतिरिक्त भी राजनैतिक दलों के कई और कार्य होते हैं जैसे देश की नीति निर्माण प्रक्रिया में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भूमिका निभाना ,जनमत को दिशा देना जनता/मतदाता को विभिन्न नीतियों से अवगत कराना इत्यादि भारत में राजनैतिक दल कुल मिलाकर 3 प्रकार के होते हैं पंजीकृत राजनैतिक दल क्षेत्रीय या राज्य स्तरीय राजनैतिक दल तथा राष्ट्रीय राजनैतिक दल इस लेख में हम क्षेत्रीय या राज्य स्तरीय राजनैतिक दल एक मजबूत लोकतंत्र के लिए क्षेत्रीय दलों का होना महत्वपूर्ण है। क्षेत्रोय दल राजनीति में विविधता को दर्शाते हैं हालाँकि इन्हें क्षेत्रीय दल कहा जाता है ,लेकिन यह जरूरी नहीं कि अपनी विचारधारा में भी ये दल क्षेत्रीय ही हों इनमें से कई दल ऐसे होते हैं जिनकी विचारधारा राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय उदाहारण के लिए साम्यवादी विचारधारा होती है। जो दल अपनी क्षेत्रीय पहचान को लेकर ही विशेष

तौर पर सचेत रहते हैं उनके महत्त्व को भी नाकारा नहीं जा सकता वे अपने–अपने क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व देश की संघीय संसद में करते हैं पिछले कुछ दशकों में क्षेत्रीय दलों की संख्या और ताकत में वृद्धि हुई है। जब राष्ट्रीय दलों को अपेक्षित बहुमत न मिले तो इन क्षेत्रीय दलों का महत्त्व और बढ़ जाता है पिछले कई चुनावों में राष्ट्रीय दल क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन करने को मजबूर हुए हैं। 1990 के दशक के बाद से लगभग प्रत्येक क्षेत्रीय दल को एक या दूसरी राष्ट्रीय स्तर की गठबंधन सरकार का हिस्सा बनने का अवसर मिला है। इससे राष्ट्रीय दलों को असीमित शक्ति की सम्भावना नहीं रहीं और हमारे देश में संघवाद और लोकतंत्र को और मज़बूती मिली वर्तमान युग लोकतंत्र का युग है। लोकतंत्र के लिए दल जरूरी हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इस लिए भारत में राजनीतिक दलों का होना निश्चित है। भारत में बहुत सारे राजनीतिक दल मौजूद है। कुछ दल राष्ट्रीय स्तर तक सीमित हैं जबकि कुछ क्षेत्रीय स्तर तक सीमित हैं। राष्ट्रीय स्तर की पार्टियों के साथ–साथ भारतीय पार्टी की एक महत्वपूर्ण विशेषता क्षेत्रीय दलों की उपस्थिति है। वर्तमान में, भारत में 60 से अधिक क्षेत्रीय दल मौजूद हैं।[9]

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. www.ECI LOKSABHA RESULT 2024

2. RNP Singh, Senior Fellow, vivekanand international foundation May 28 ,2018

3.Milan vaishanav director and senior fellow south asia program vaishanv's political economy of india.

4.https://digital.nios.ac.in/topic.php?id=317hi

5. ROLE OF REGIONAL POLITICAL PARTIES IN CENTRE-STATE RELATIONS WITH SPECIAL REFERENCE TO NATIONAL CONFERENCE (J&K)" MOHAMMAD HUSSAIN YATOO

6.Grover Verinder, "Political System in India Vol-7", Deep & Deep Publications, New Delhi, 1989, p. 83

7 Dr. Xaxa and Mrs Johani, " Regional Political Parties Strengthening Federalism in India: An Analysis", 2014, vol-2, pp.291-295

8-W.H.Morris Jones, "The Government and Politics of India", Hutchinson, London, 1971, p.15

9-Ram D. Sundar (eds),"Coalition Politics In India Search for Political Stability", op.cit, p.143

10-Bhuyun Dasarathi, "Regional Political Parties in India" Mittal Publication, Delhi, 2007

11- Times Of India

12-Amar Ujala

13-Dainik Jagran

14-Hindutan